अध्याय 33

मिस्र से लेकर कनान तक - एक पुनः अवलोकन और एक चुनौती

इस्राएली यरदन के किनारे पर थे और कनान में प्रवेश करने वाले थे। यह अध्याय मूसा द्वारा उनकी यात्रा का ब्यौरा है (33:1-49) और परमेश्वर की आज्ञा कि इससे आगे उन्हें क्या करना है (33:50-56)। अध्याय का पहला और अधिक लंबा भाग इस्राएल की मिस्र से लेकर यरदन के किनारे तक की यात्रा का एक पुनः अवलोकन है जब वे एक से दूसरी छावनी जा रहे थे। अंतिम सात आयतों में परमेश्वर के निर्देश हैं कि इस्राएलियों को यरदन पार करने के पश्चात कानन के निवासियों के साथ क्या करना था: (1) उन्हें देश के निवासियों को पूर्णतः खदेड़ देना था। (2) उन्हें देश में से मूर्तिपूजा के प्रत्येक चिन्ह को मिटा देना था। (3) देश को इस्राएलियों में चिट्ठी डालकर विभाजित करना था। (4) बड़े गोत्रों को, छोटे गोत्रों की तुलना में, भूमि का अधिक बड़ा भाग मिलना था।

इस्राएलियों का वाचा के देश में प्रवेश गिनती के अंतिम पाँच अध्यायों का प्रमुख विषय है। इस खण्ड को संक्षेप में ऐसे कहा जा सकता है:

32 - रूबेन और गाद और मनश्शे के आधे गोत्र को प्रदान की गई भूमि।
33 - देश तक की यात्रा और देश के लोगों के साथ किए जाने वाला कार्य।
34 - सीमाएं और भूमि का विभाजन।
35 - लेवियों के लिए देश में नगरों का प्रदान किया जाना (शरण के नगरों सहित)।
36 - प्रत्येक गोत्र की विरासत को उसी गोत्र में ही रखा जाना था।

इन अध्यायों में भूमि से सम्बन्धित दिए गए नियम इस्राएल की नई पीढ़ी के लिए प्रोत्साहन देनेवाले शब्द थे। यद्यपि उनके माता-पिता को प्रतिज्ञात देश में प्रवेश नहीं करने दिया था, पर वे जल्द ही उसे अपने अधिकार में लेनेवाले थे।

पीछे की ओर देखना:

मिस्र से यरदन तक की यात्रा (33:1-49)

[1]जब से इस्राएली मूसा और हारून की अगुवाई में दल बाँधकर मिस्र देश से
निकले, तब से उनके ये पड़ाव हुए। [2]मूसा ने यहोवा से आज्ञा पाकर उनके कूच
उनके पड़ावों के अनुसार लिख दिए; और वे ये हैं। [3]पहले महीने के पन्द्रहवें दिन
को उन्होंने रामसेस से कूच किया; फसह के दूसरे दिन इस्राएली सब मिस्रियों के
देखते बेखटके निकल गए, [4]जब कि मिस्री अपने सब पहिलौठों को मिट्टी दे रहे थे
जिन्हें यहोवा ने मारा था; और उसने उनके देवताओं को भी दण्ड दिया था।

[5]इस्राएलियों ने रामसेस से कूच करके सुक्कोत में डेरे डाले। [6]और सुक्कोत से
कूच करके एताम में, जो जंगल के छोर पर है, डेरे डाले। [7]और एताम से कूच करके
वे पीहहीरोत को मुड़ गए, जो बालसपोन के सामने है; और मिगदोल के सामने
डेरे खड़े किए। [8]तब वे पीहहीरोत के सामने से कूच कर समुद्र के बीच होकर जंगल
में गए, और एताम नामक जंगल में तीन दिन का मार्ग चलकर मारा में डेरे डाले।
[9]फिर मारा से कूच करके वे एलीम को गए, और एलीम में जल के बारह सोते और
सत्तर खजूर के वृक्ष मिले, और उन्होंने वहाँ डेरे खड़े किए। [10]तब उन्होंने एलीम से
कूच करके लाल समुद्र के तट पर डेरे खड़े किए। [11]और लाल समुद्र से कूच करके
सीन नामक जंगल में डेरे खड़े किए। [12]फिर सीन नामक जंगल से कूच करके उन्होंने
दोपका में डेरा किया। [13]और दोपका से कूच करके आलूश में डेरा किया। [14]और
आलूश से कूच करके रपीदीम में डेरा किया, और वहाँ उन लोगों को पीने का पानी
न मिला। [15]फिर उन्होंने रपीदीम से कूच करके सीनै के जंगल में डेरे डाले। [16]और
सीनै के जंगल से कूच करके किब्रोथत्तावा में डेरा किया।

[17]और किब्रोथत्तावा से कूच करके हसेरोत में डेरे डाले। [18]और हसेरोत से कूच
करके रित्मा में डेरे डाले। [19]फिर उन्होंने रित्मा से कूच करके रिम्मोनपेरेस में डेरे
खड़े किए। [20]और रिम्मोनपेरेस से कूच करके लिब्ना में डेरे खड़े किए। [21]और लिब्ना
से कूच करके रिस्सा में डेरे खड़े किए। [22]और रिस्सा से कूच करके कहेलाता में डेरा
किया। [23]और कहेलाता से कूच करके शेपेर पर्वत के पास डेरा किया। [24]फिर उन्होंने
शेपेर पर्वत से कूच करके हरादा में डेरा किया। [25]और हरादा से कूच करके मखेलोत
में डेरा किया। [26]और मखेलोत से कूच करके तहत में डेरे खड़े किए। [27]और तहत से
कूच करके तेरह में डेरे डाले। [28]और तेरह से कूच करके मित्का में डेरे डाले। [29]फिर
मित्का से कूच करके उन्होंने हशमोना में डेरे डाले। [30]और हशमोना से कूच करके
मोसेरोत में डेरे खड़े किए। [31]और मोसेरोत से कूच करके याकानियों के बीच डेरा
किया। [32]और याकानियों के बीच से कूच करके होर्हग्गिदगाद में डेरा किया। [33]और
होर्हग्गिदगाद से कूच करके योतबाता में डेरा किया। [34]और योतबाता से कूच करके
अब्रोना में डेरे खड़े किए। [35]और अब्रोना से कूच करके एस्योनगेबेर में डेरे खड़े
किए। [36]और एस्योनगेबेर से कूच करके उन्होंने सीन नामक जंगल के कादेश में डेरा
किया। [37]फिर कादेश से कूच करके होर पर्वत के पास, जो एदोम देश की सीमा पर

है, डेरे डाले।

[38]वहाँ इस्राएलियों के मिस्र देश से निकलने के चालीसवें वर्ष के पाँचवें महीने के पहले दिन को हारून याजक यहोवा की आज्ञा पाकर होर पर्वत पर चढ़ा, और वहाँ मर गया। [39]और जब हारून होर पर्वत पर मर गया तब वह एक सौ तेईस वर्ष का था। [40]और अरात का कनानी राजा, जो कनान देश के दक्षिण भाग में रहता था, उसने इस्राएलियों के आने का समाचार पाया।

[41]तब इस्राएलियों ने होर पर्वत से कूच करके सलमोना में डेरे डाले। [42]और सलमोना से कूच करके पूनोन में डेरे डाले। [43]और पूनोन से कूच करके ओबोस में डेरे डाले। [44]और ओबोस से कूच करके अबारीम नामक डीहों में जो मोआब की सीमा पर हैं, डेरे डाले। [45]तब उन डीहों से कूच करके उन्होंने दीबोनगाद में डेरा किया। [46]और दीबोनगाद से कूच करके अल्मोनदिबलातैम में डेरा किया। [47]और अल्मोनदिबलातैम से कूच करके उन्होंने अबारीम नामक पहाड़ों में नबो के सामने डेरा किया। [48]फिर अबारीम पहाड़ों से कूच करके मोआब के अराबा में, यरीहो के पास यरदन नदी के तट पर डेरा किया। [49]और उन्होंने मोआब के अराबा में बेत्यशीमोत से लेकर आबेलशित्तीम तक यरदन के किनारे-किनारे डेरे डाले।

आयतें 1, 2. इस लंबे खण्ड में इस्राएल के **मिस्र देश से निकलने** से लेकर उनके यरदन नदी के निकट आने तक का ब्यौरा है। **मूसा** ने अपने आप को इस यात्रा के विवरण का स्रोत बताया, जो एक ऐसा तथ्य है जिससे उसके पेंटाट्यूक का लेखक होने का अतिरिक्त प्रमाण मिलता है। उसने उनकी यात्रा के समय इस्राएल के यात्रा आरंभ करने के स्थानों का लेखा रखा। जिस शब्द का अनुवाद "कूच करना" מוֹצָא *(मोत्सा')* हुआ है उसे "निकलना" (KJV) और "क्रम" (NIV) भी किया गया है।

आयतें 3, 4. रामसेस से यात्रा का आरंभ **पहले महीने के पन्द्रहवें दिन को ... फसह के दूसरे दिन** हुआ, जब परमेश्वर ने मिस्र पर अंतिम विपत्ति डाली। अपनी बंधुआई के देश में से **इस्राएली सब मिस्रियों के देखते बेखटके निकल गए** (निर्गमन 14:8)। जिस इब्रानी मुहावरे का अनुवाद "बेखटके" हुआ है उसका शब्दार्थ है "ऊँचे हाथ के साथ" (ASV) या "हाथ उठाए हुए।" कुछ अनुवाद कहते हैं कि इस्राएली " निडर" निकल गए (NJPSV; REB; NLT), जबकि कुछ अन्य शब्द "विजयी" (RSV; ESV) प्रयोग करते हैं। उस समय **मिस्री** शोक में थे और **अपने सब पहिलौठों को मिट्टी दे रहे थे जिन्हें यहोवा ने मारा था**। अपने चुने हुए लोगों और दासत्व के उनके मिस्री स्वामियों में स्पष्ट भिन्नता करने के द्वारा (निर्गमन 11:7), परमेश्वर ने अपने आप को सच्चा परमेश्वर प्रमाणित किया था तथा **उनके सारे देवताओं को भी दण्ड दिया था** (निर्गमन 12:12)।

आयतें 5-37. इससे आगे की आयतें मूलतः चालीस नामों की सूची हैं - या बयालीस की, इस्राएल के मिस्र से आरंभ के स्थान और यरदन के पूर्व में उनके गंतव्य स्थान को भी गिनते हुए। प्रत्येक भौगोलिक भाग को उसी शैली में लिखा गया है, यह कहकर कि उन्होंने से कूच करके _____ में डेरे डाले [या पर या निकट] _____। *द आईवीपी बाइबल कॉमेन्ट्री* के अनुसार, इस प्रकार की सूची बनाना

उनकी सांस्कृतिक व्यवस्था में सही बैठती है:

> ऐसी यात्रा विवरण शैली निकट पूर्व के क्रमिक इतिहास विवरण में सामान्यतः पाई जाती है, नौवीं शताब्दी ईसा पूर्व में भी … [जैसे कि] अश्शूर के राजाओं, जिन्होंने अपने अभियानों का विवरण उनके रुकने के स्थानों और जीते गए नगरों के नामों के द्वारा दिया। इस समय के और निकट वे मिस्री यात्रा के ब्यौरे हैं जो उनके सीरिया-पलिस्तीनी क्षेत्रों में जाने के लेखों में मिलते हैं।[1]

इस अध्याय में पाए जाने वाले बयालीस नामों की सूची यात्रा के खण्ड के अनुसार दी गई है, उसके आयत के हवाले के साथ। कई स्थानों का नाम इस अध्याय के बाहर मिलता है।

I. रामसेस से लाल सागर तक (33:5-10; निर्गमन 12-15)
   1. **रामसेस** (33:5; निर्गमन 12:37)
   2. **सुक्कोत** (33:5; निर्गमन 12:37)
   3. **एताम** (33:6; निर्गमन 13:20)
   4. **पीहहीरोत**, या **मिगदोल** (33:7; निर्गमन 14:2)
   5. **मारा** (33:8; निर्गमन 15:23)
   6. **एलीम** (33:9; निर्गमन 15:27)
   7. **लाल समुद्र** (33:10)

II. लाल समुद्र से लेकर सीन नामक जंगल तक (33:11-15; निर्गमन 16-19)
   8. **सीन नामक जंगल** (33:11; निर्गमन 16:1)
   9. **21*दोपका** (33:12)
   10. **आलूश** (33:13)
   11. **रपीदीम** (33:14; निर्गमन 17:1)
   12. **सीनै के जंगल** (33:15; निर्गमन 19:2)

III. सीनै के जंगल से लेकर होर पर्वत तक (33:16-37)
   13. **किब्रोथत्तावा** (33:16; 11:34)
   14. **हसेरोत** (33:17; 11:35)
   15. **रित्मा** (33:18)
   16. **रिम्मोनपेरेस** (33:19)
   17. **लिब्ना** (33:20)
   18. **रिस्सा** (33:21)
   19. **कहेलाता** (33:22)
   20. **शेपेर पर्वत** (33:23)
   21. **हरादा** (33:24)
   22. **मखेलोत** (33:25)

23. **तहत** (33:26)
24. **तेरह** (33:27)
25. **मित्का** (33:28)
26. **हशमोना** (33:29)
27. **मोसेरोत** (33:30)
28. **याकानियों** (33:31; व्यव. 10:6)
29. **होर्हग्गिदगाद** (33:32)
30. **योतबाता** (33:33; व्यव. 10:7)
31. **अब्रोना** (33:34)
32. **एस्योनगेबेर** (33:35)
33. **सीन नामक जंगल के कादेश-बर्ने** (33:36; 20:1)
34. **होर पर्वत** (33:37; 20:22)

इन स्थानों के अतिरिक्त, कुछ ऐतिहासिक घटनाओं का भी उल्लेख हुआ है। 33:8 में इस्राएल **समुद्र के बीच होकर** निकला (निर्गमन 14)। 33:9 में, उन्होंने "एलीम" में छावनी डाली जहाँ नखलिस्तान था - **जल के बारह सोते और सत्तर खजूर के वृक्ष मिले** (निर्गमन 15:27)। 33:14 में परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए "रपीदीम" में **पानी** उपलब्ध करवाया (निर्गमन 17:1-7)।

आयतें 38, 39. यात्रा के इस विवरण में **होर पर्वत पर हारून याजक** की **एक सौ तेईस वर्ष** आयु में हुई मृत्यु का लेख है। ऐसा इस्राएलियों के **मिस्र** से निकलने के **चालीसवें वर्ष के पाँचवें महीने के पहले दिन को** हुआ (20:23-28)। वह **यहोवा की आज्ञा पाकर** पर्वत पर चढ़ गया, और वहाँ उसकी मृत्यु हो गई। यह नहीं बताया गया है कि हारून की मृत्यु का उल्लेख क्यों किया गया है। हो सकता है कि यह इसलिए है क्योंकि वह इस्राएल के दो प्रमुख अगुवों में से एक था, या संभवतः इसलिए क्योंकि महायाजक की मृत्यु का धर्मविज्ञान में व्यवस्था के अनुसार महत्व था।

आयत 40. इसके बाद सूची में **अरात का राजा** है, **उसने इस्राएलियों के आने का समाचार पाया** और आक्रमण कर दिया। परमेश्वर ने इस्राएली सेना को सक्षम किया कि वह इस **कनानी** राजा की सेना को पराजित कर सके (21:1-3)।

आयत 41-49. इस छोटे से ऐतिहासिक अंतराल के पश्चात, स्थानों के नाम की सूची पुनः आरंभ हो जाती है, और आयत 48 में यात्रा के ब्यौरे का वर्णन अन्त होता है।

IV. होर पर्वत से मोआब के मैदानों तक (33:41-48)
35. **सलमोना** (33:41)
36. **पूनोन** (33:42)
37. **ओबोस** (33:43; 21:10)
38. **अबारीम**, या लयिम (33:44, 45; 21:11)

39. **दीबोनगाद** (33:45)
40. **अल्मोनदिबलातैम** (33:46)
41. **अबारीम नामक पहाड़ों में नबो के सामने** (33:47)
42. **मोआब के अराबा** में, यरीहो के पास (33:48; 22:1)

सूची में कुछ कठिनाइयां हैं। इसमें अन्य स्थानों में आने वाले कुछ नाम नहीं है, और इस्राएल की यात्रा के विवरणों में अन्य किसी भी स्थान पर नहीं दिए गए नाम सम्मिलित किए गए हैं, और कभी-कभी प्रतीत होता है कि इस्राएल के रुकने के स्थानों के क्रम को पलट दिया गया है। इसके अतिरिक्त, इनमें से अनेकों स्थानों के होने का (इस अध्याय में दिए गए वर्णन के अतिरिक्त) कोई भी ऐतिहासिक अथवा पुरातत्व विज्ञान के अनुसार प्रमाण नहीं मिलता है। जिस स्थान से लोगों ने लाल-सागर पार किया, सीनै का स्थान, और इसके बाद की यात्रा के क्षेत्र, बाइबल के विद्वानों के लिए स्थापित करने के लिए सबसे कठिन स्थानों में से हैं।[2]

सूची पर ध्यान करते समय अनेकों विचारों को स्मरण रखा जाना चाहिए: (1) प्रेरणा पाए हुए लेखक के द्वारा चालीस (या बयालीस) नामों को सम्मिलित करने के प्रयास कुछ नामों के होने या न होने का कारण हो सकता है। (2) ये "कूच करने" के स्थान बहुधा छावनियों के स्थान थे, न कि नगरों के जहाँ वे लोग काफी समय तक रुके हों। इससे उनके विषय पुरातत्व विज्ञान द्वारा कोई प्रमाण न उपलब्ध करवाए जाने को समझा जा सकता है। जंगल में भटकने के पूरे समय इस्राएली लोग तम्बुओं में रहते हैं न कि बनाए हुए घरों में कि उनके अवशेष पुरातत्व विज्ञानियों को पाए जाएं। (3) इस सूची का उद्देश्य ऐतिहासिक लेख प्रदान करना नहीं था; इसका प्राथमिक उद्देश्य धर्मविज्ञान से संबंधित था।

स्थानों के नाम की संख्या, चालीस या बयालीस होना, अर्थपूर्ण हो सकती है। पुराने नियम में प्रमुख संख्या "चालीस" संबंधित है, बाढ़ के साथ (उत्पत्ति 7:12, 17), सीनै पर्वत पर मूसा के समय के साथ (निर्गमन 24:18; 34:28), टोह लेने वालों के द्वारा वाचा के देश में बिताए गए दिनों के साथ (गिनती 13:25), और इस्राएल की जंगल यात्रा के साथ (गिनती 32:13)। जिस प्रकार बाइबल की वंशावलियों में कभी-कभी कुछ व्यक्तियों के नाम छोड़ दिए जाते हैं, उसी प्रकार कुछ स्थानों के नाम यहाँ छोड़ दिए गए हैं, संभवतः योग को चालीस या बयालीस बनाने के लिए। महत्वपूर्ण स्थान जिन्हें सम्मिलित नहीं किया गया उनमें मस्सा और मरीबा हैं। फिर भी, लेख "मिस्र में रामसेस से लेकर यरदन के पार विजय अभियान आरंभ करने तक की यात्रा का लगभग पूर्ण विवरण प्रदान करता है।"[3]

पहले के स्थानों का उल्लेख, अधिकांशतः, उन अध्यायों में आया है जो मिस्र से इस्राएल के निकल जाने और उनके सीनै की यात्रा आरंभ करने के विषय बताते हैं। एक बार फिर, सूची पुस्तक में इससे पहले पाए गए वर्णन से सटीक मेल नहीं खाती है। सूची के मध्य में दिए गए नामों में से अधिकांश अन्यथा अज्ञात हैं।

सूची में दो तिथियाँ दी गई हैं। निकल जाने को "पहले महीने के पन्द्रहवें दिन" से लिया गया है (33:3), और हारून की मृत्यु को "इस्राएलियों के मिस्र देश से

निकलने के चालीसवें वर्ष के पाँचवें महीने के पहले दिन" (33:38) से लिया गया है। इसलिए यह सूची जंगल की यात्रा के सारे समय का ब्यौरा है।

संभवतः इससे भी अधिक महत्वपूर्ण वे घटनाएँ हैं जिनका उल्लेख नहीं किया गया है। टोह लेने वालों द्वारा दिए गए बुरे विवरण के कारण इस्राएल के स्वधर्म त्याग के विषय कुछ नहीं कहा गया है और न ही उस समय परमेश्वर द्वारा उन्हें दिए गए मृत्यु दण्ड के विषय कुछ कहा गया है। जंगल में इस्राएल द्वारा किए गए अनेकों अन्य पापों का भी उल्लेख नहीं है।

इस सूची को सम्मिलित क्यों किया गया? यद्यपि इस प्रकार के यात्रा विवरण प्राचीन निकट पूर्व में सामान्य थे, हम इस बात के लिए निश्चित हो सकते हैं कि परमेश्वर ने गिनती में इसे सम्मिलित करने के लिए मात्र भविष्य की पीढ़ियों के लिए ऐतिहासिक रुचि का लेख प्रदान करने के लिए ही प्रेरित नहीं किया था। परन्तु इसे पाठकों को कुछ आत्मिक लाभ प्रदान करने के उद्देश्य से किया था। इस यात्रा विवरण को पढ़ने से मिलने वाला अभिप्राय यह प्रतीत होता है कि यद्यपि इस्राएल ने कई वर्षों तक लम्बी यात्रा की, परमेश्वर सदैव ही उनके साथ ही बना रहा। वह उन्हें मिस्र से निकाल कर लाया था, उन्हें लाल-समुद्र में से निकाला, जंगल में उनकी आवश्यकताओं को पूरा किया, और उनके शत्रुओं को पराजित किया।

यह अध्याय इस्राएल के पापों का कोई उल्लेख नहीं करता है, यद्यपि मारा का उल्लेख उन्हें पानी के लिए उनके कुड़कुड़ाने का स्मरण करवा सकता था। हारून की मृत्यु के अतिरिक्त, इस अध्याय में कोई भी बुरा समाचार नहीं है। परमेश्वर इस्राएल की नई पीढ़ी से कह रहा प्रतीत होता है कि "चाहे तुम्हारे बाप-दादों ने पाप किया था, परन्तु मैंने उन पापों को भुला दिया है। तुम अब इस यात्रा को पूरा कर सकते हो, वाचा के देश में प्रवेश कर सकते हो, और एक नए आरंभ का आनन्द ले सकते हो।" इसलिए यह अध्याय परमेश्वर के लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए था - उन्हें आश्वस्त करने के लिए कि यदि परमेश्वर चालीस वर्ष तक उनके साथ रहा है, तो उनके साथ तब भी रहेगा जब वे उसके द्वारा उन्हें दिए गए देश को जीतेंगे और उसमें बस जाएँगे।

आगे की ओर देखना: देश के निवासियों को खदेड़ना, देश को विभाजित करना (33:50-56)

50फिर मोआब के अराबा में, यरीहो के पास की यरदन नदी के तट पर, यहोवा ने मूसा से कहा, 51"इस्राएलियों को समझाकर कह: जब तुम यरदन पार होकर कनान देश में पहुँचो, 52तब उस देश के निवासियों को उनके देश से निकाल देना; और उनके सब नक्काशीदार पत्थरों को और ढली हुई मूर्तियों को नष्ट करना, और उनके सब पूजा के ऊँचे स्थानों को ढा देना। 53और उस देश को अपने अधिकार में लेकर उसमें निवास करना, क्योंकि मैं ने वह देश तुम्हीं को दिया है कि तुम उसके अधिकारी हो। 54और तुम उस देश को चिट्ठी डालकर अपने कुलों के अनुसार बाँट

लेना; अर्थात् जो कुल अधिकवाले हैं उन्हें अधिक, और जो थोड़ेवाले हैं उनको थोड़ा भाग देना; जिस कुल की चिट्ठी जिस स्थान के लिये निकले वही उसका भाग ठहरे; अपने पितरों के गोत्रों के अनुसार अपना अपना भाग लेना। 55परन्तु यदि तुम उस देश के निवासियों को अपने आगे से न निकालोगे, तो उनमें से जिनको तुम उस में रहने दोगे वे मानो तुम्हारी आँखों में काँटे और तुम्हारे पंजरों में कीलें ठहरेंगे, और वे उस देश में जहाँ तुम बसोगे तुम्हें संकट में डालेंगे। 56और उनसे जैसा व्यवहार करने की मनसा मैं ने की है वैसा ही तुम से करूँगा।"

आयत 50. अध्याय की अंतिम आयतों में, परमेश्वर ने **मूसा** को निर्देश दिए। यह समय के आने तक वे यात्री **मोआब के अराबा में, यरीहो के पास की यरदन नदी के तट पर** पहुँच चुके थे (देखें 22:1)।

आयतें 51, 52. परमेश्वर द्वारा इस समय दिए गए निर्देश, यरदन पार कर के कनान में प्रवेश करने के पश्चात इस्राएलियों को क्या करना था, के विषय में थे। उन्हें **उस देश के निवासियों को उनके देश से निकाल देना** था तथा कनानियों की मूर्ति पूजा से संबंधित प्रत्येक वस्तु को **नष्ट** कर देना था। (निर्गमन 23:20-33; 34:11-16; व्यव. 7:1-6)। परमेश्वर के साथ इस्राएल के संबंधों में कनानी धर्म एक खतरनाक जोखिम हो सकता था। बाद के समय में, इसके कारण उन्हें वाचा किए हुए देश से निष्कासित भी होना पड़ा।

मूर्ति पूजा से संबंधित नष्ट होने वालों में सबसे पहली श्रेणी थी **नक्काशीदार पत्थरों** (מַשְׂכִּית, *मसकित*) की वस्तुओं की। इस शब्द को NIV अधिक मूल रूप में "नक्काशीदार मूर्तियां" अनुवाद करती है। इसमें काठ से बने अशेरा की लाठें और पत्थर के बाल के दस्ते, ऐसी वस्तुएँ जिन्हें नक्काशी कर के बनाया गया था, भी सम्मिलित होतीं। इससे अगली श्रेणी थी **ढली हुई मूर्तियों** (מַסֵּכוֹת, *मस्सेकोथ*) की। देवी-देवताओं की ये मूर्तियां पिघली हुई धातु, जैसे कि तांबा या पीतल को मिट्टी के सांचों में डाल कर बनाई जाती थीं। और अन्त में, श्रेणी थी **पूजा के ऊँचे स्थानों** (בָּמוֹת, *बमोथ*) की, जो मूर्ति पूजा के स्थान थे, सामान्यतः किसी पहाड़ी की चोटी पर बने हुए। सामान्यतः ऊँचे स्थानों पर बलिदान चढ़ाने की एक वेदी होती थी, और खड़े किए हुए पत्थर, तथा उस देवी या देवता के चिन्ह जिसकी वहाँ उपासना की जाती थी।[4]

आयत 53. उन्हें **उस देश को अपने अधिकार में लेकर उसमें निवास करना** था। अन्ततः वे उस देश में पहुँच गए थे जिसकी प्रतिज्ञा उनके पितरों - अब्राहम, इसहाक, और याकूब से की गई थी (उत्पत्ति 13:14-18; 26:1-5; 28:10-17)। परमेश्वर ने उन से कहा "**मैं ने वह देश तुम्हीं को दिया है कि तुम उसके अधिकारी हो।**"

आयत 54. उन्हें उस देश को **चिट्ठी डालकर अपने कुलों के अनुसार बाँट लेना** था, प्रत्येक **कुल** के माप के अनुसार (देखें 26:52-56)। **अधिक वालों** को **अधिक भाग** मिलना था, और जो **थोड़े वाले** कुल थे उनको **थोड़ा भाग देना** था।

आयतें 55, 56. इस अध्याय का अन्त परमेश्वर द्वारा इस्राएल को दी गई

चेतावनी के साथ होता है, क्या होगा यदि वे देश के निवासियों को निकाल कर भगा नहीं देंगे। जो रह जाएँगे वे इस्राएलियों के लिए **काँटे** और **कीलें** समान बनकर उन्हें **संकट** में डालेंगे। संभवतः परमेश्वर उन्हें सचेत कर रहा था कि वे इस्राएलियों को अपने घृणित व्यवहार का अनुसरण करने के लिए प्रभावित कर देंगे। इसका परिणाम यह होगा कि परमेश्वर फिर इस्राएलियों के साथ वह करेगा जैसा उसने कनानियों के साथ करने के लिए विचार किया था: जैसे परमेश्वर की योजना थी कि इस्राएली उन मूर्तिपूजकों को देश से निकाल भगाएं, उसी प्रकार से वह इस्राएलियों को उस देश से निकाल भगाएगा जो उसने उन्हें दिया था यदि वे उसके अनाज्ञाकारी होते (देखें व्यव. 28:63)।

एक भिन्न विचार बी. मारसिंघ द्वारा दिया गया, उन्होंने कहा कि यदि इस्राएल, कनानियों को नहीं निकाल भगाता और उनके मूर्तिपूजा की वस्तुओं को नष्ट नहीं करता, "तो परमेश्वर इस आज्ञा को पलट कर उनपर डाल देता।" उसने स्पष्ट किया, "जो बातें [परमेश्वर] कनानियों पर लेकर आया वही उसके लोगों पर भी आ पड़ेंगी। वे कनान में उस देश के मूर्तिपूजकों के हाथों वही सब यातनाएं सहेंगे जो उन्होंने मिस्रियों के हाथों सही थीं।"[5]

इस्राएलियों को इस चेतावनी से भी प्रोत्साहन मिला होगा, क्योंकि इससे संकेत मिल रहा था कि शीघ्र ही वे देश में प्रवेश करने पाएँगे! एक बार वे अपने नए निवास में आ जाते, तो उन्हें उसके मूल निवासियों को निकालना होगा; परन्तु इस कार्य को पूरा करने में परमेश्वर उनकी सहायता करता।

अनुप्रयोग

"मार्ग पर" (33:1-49)

लोक संगीत के एक गायक, विली नेल्सन ने एक गाने "ऑन द रोड अगेन" को बहुत बार गाया है। जिस प्रकार इस्राएली "मार्ग पर" - लगातार यात्रा करते रहे - लगभग चालीस वर्ष तक (33:1-49), उसी प्रकार मसीही भी "मार्ग पर" हैं, इस संसार से होकर यात्रा कर रहे हैं। हमें अन्ततः अपने वास्तविक घर, स्वर्ग में जाकर बस जाने की ओर देखते रहना चाहिए!

मसीही के जीवन को एक यात्रा के समान कहा गया है। उदाहरण के लिए, जॉन बनयन द्वारा लिखित एक प्रसिद्ध सत्रहवीं शताब्दी के उपन्यास *पिलग्रिम्स प्रोग्रेस* में मसीही के जीवन को एक तीर्थ यात्री के समान दिखाया गया है जो "सिलेस्टियल सिटी" की ओर यात्रा पर निकला है।

नए नियम में, कलीसिया की तुलना इस्राएल के जंगल के समय से की गई है। प्रेरित लेखकों ने इस्राएल के अनुभवों के द्वारा मसीहियों को स्वधर्म त्याग के विरुद्ध सचेत किया है (1 कुरि. 10:1-12; इब्रा. 3; 4)। इसके अतिरिक्त, यीशु ने कहा कि उसके अनुयायियों को "संसार में" तो होना है परन्तु "संसार का" नहीं होना है (यूहन्ना 17:11, 16)। पौलुस ने ध्यान करवाया "पर हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है" (फिलि. 3:20), पृथ्वी पर नहीं; और पतरस ने लिखा कि मसीही इस संसार में

"परदेशी और यात्री" (1 पतरस 2:11) हैं। मसीहियों को वही विश्वास करना चाहिए जैसा कि एक गाने में आया है "यह संसार मेरा घर नहीं है, मैं तो बस इसमें से होकर निकल ही रहा हूँ"[6] - और हमें इसी के अनुसार व्यवहार भी करना चाहिए।

हम मसीहियों का जीवन कैसा हो जाएगा यदि हम इस सत्य को अपना लें कि जब तक हम इस संसार में हैं तब तक हम बस "मार्ग पर" हैं? (1) हम इस विचार को स्वीकार कर लेंगे कि हमारा प्राथमिक कार्य अपने स्वर्गीय राजा की इच्छा को पूरा करना है, उसके निमित्त राजदूतों के समान रहना है (2 कुरि. 5:20)। (2) हमें बोध होगा कि हमारे मानक किसी सांसारिक अधिकारी या हमारे आस-पास के लोगों के द्वारा निर्धारित नहीं किए जाते हैं, वरन स्वयं परमेश्वर के द्वारा किए जाते हैं। (3) हम मसीह की आत्मिक सच्चाइयों के मूल्य का, संसार की वस्तुओं से ऊंचा आकलन करेंगे। हम अपने आप को "संसार में धन" एकत्रित करने में व्यस्त नहीं करेंगे वरन अपने लिए "स्वर्ग में धन" एकत्रित करने पर ध्यान लगाएंगे (मत्ती 6:19, 20)।

समाप्ति नोट

[1]जॉन एच. वॉल्टन, विक्टर एच. मैथ्यूस, एण्ड मार्क डब्ल्यू. कवालास, *द आईवीपी बाइबल बैकग्राउंड कॉमेन्ट्री: ओल्ड टेस्टामेंट* (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इन्टरवर्सिटी प्रैस, 2000), 168. [2]गॉर्डन जे. वेनहैम, गिनती, द टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्रीज (डाउनर्स ग्रोव, इलनॉयसः इंटर-वर्सिटी प्रेस, 1981), 220-30. इन प्रश्नों पर ए. नोर्टसिज, *गिनती*, ट्रान्स. एड वेन डर मास, बाइबल स्टूडेन्ट्स कमेन्ट्री (ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगन: जोनडर्वन पब्लिशिंग हाउस, 1983), 288-90 में भी चर्चा हुई है। [3]वॉल्टन, मैथ्यूस, एण्ड कवालास, 168. [4]आर. डेनिस कोले, "नम्बर्स," इन ज़ोंडर्वन इलस्ट्रेटेड बाइबल बैकग्राउन्ड्स कॉमेन्टरी, वॉल्यूम 1, उत्पत्ति, निर्गमन, लैव्यव्यवस्था, गिनती, व्यवस्थाविवरण, एड. जॉन एच. वाल्टन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ोंडर्वन, 2009), 398-99. [5]बी. मारसिंघ, *गिनती: अ प्रैक्टिकल कमेंट्री,* ट्रांस. जॉन त्रिएन्ड (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1987), 115. [6]एल्बर्ट ई. ब्रुमले, "दिस वर्ल्ड इस नौट माय होम," *सौंग्स ऑफ द चर्च*, कोम्प. एण्ड एडिटर एल्टन एच. होवर्ड (वेस्ट मोनरो, लुसियानाः होवर्ड पब्लिशर्स, 1977).